सरदार भगत सिंह
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुद्रपुर (ऊधम सिंह नगर) उत्तराखंड
"इंकलाब जिंदाबाद"
ऋतस्य पथा प्रेत
त्रैमासिक ई-बुलेटिन
मेधा
शिक्षा से समृद्धि की ओर...
जून, जुलाई एवं अगस्त 2026
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुद्रपुर (ऊधम सिंह नगर)
ज्ञान
संस्कार
सृजन
समाज
साहित्य । शोध । शिक्षा । राष्ट्र निर्माण

प्राचार्य की कलम से

सामाजिक मूल्य और आज का युवा

आज जब विश्व के अधिकांश राष्ट्र वृद्ध वय होते जा रहे हैं वहीं अपने देश का प्रत्येक तीसरा व्यक्ति युवा है। विश्व को सबसे विशाल युवा शक्ति के रूप में भारत पर सबकी दृष्टि स्वाभाविक है ऊर्जा के असीम भण्डार युक्त राष्ट्र का वर्तमान व भविष्य क्या वैश्विक नेतृत्व की ओर निर्णायक बढ़त ले चुका है? युवा शब्द ही तन–मन में नवचेतना उमग व उत्साह का संचार कर देता है। असम्भव को सम्भव कर गुजरने की दृढ़ इच्छा शक्ति युक्त साहस, नई सोच व मंजिलों का स्वप्न लिए युवा ही वह शक्ति है जिसके अग्रगामिता को कोई बाधित नहीं कर सकता, इतिहास गवाह है कि किसी भी समाज में अद्यतन घटित क्रान्तियॉ चाहे वह सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, व्यापारिक, हो या सांस्कृतिक क्षेत्र में युवाओं की भूमिका सर्वविदित है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों के ''मंदिर जाने से अधिक आवश्यक है युवा फुटबॉल खेले। युवाओं के स्नायु फौलादी होने चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है''।

परिवर्तन की आँधी का वाहक युवा पीढ़ी में दशा एवं दिशा सहित मानस निर्माण करने वाली स्वस्थ पारम्परिक सामजिक मूल्यों का हस्तान्तरण एवं प्रतिस्थापना का परिवेश उनके व्यक्तित्व को रचनात्मक व सकारात्मक स्वरूप प्रदान कर सकें, इसके लिए समुचित वातावरण– पृष्ठभूमि में परिवार, समाज व शैक्षिक संस्थानों के साथ आज की डिजिटल दुनिया के विविध उपादानों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। उदारीकरण, निजीकरण, व वैश्वीकरण (एल.पी.जी.) के चरम दौर में युवा होती जेन–जी व जेन अल्फा का उपलब्ध वैश्विक संसाधनयुक्त दृष्टि ने स्वतन्त्रता, समानता व बन्धुत्व को सही अर्थो में धरातल में उतारने का कार्य किया है।इटली के सुप्रसिद्ध विचारक मेजिनी ने कहा था– '' यदि समाज में क्रान्ति लानी है तो क्रान्ति का नेतृत्व युवाओं के हाथों में दे दो। युवक समाज के सदस्यों में असीम शक्ति छिपी रहती है।'' किंतु यह भी निर्विवाद सत्य है कि राष्ट्र व समाज को नई दिशा प्रदान करने वाली ये ऊर्जा, देश की दुनिया के शिखर पर पहुॅचाने वाली ये शक्ति यदि उर्ध्वगामी होने के स्थान पर अधोगामी हो जाये।

यह निश्चित ही सार्वजनिक चिंता का विषय बन जाता है। जिस ऊर्जा का सदुपयोग व मानव कल्याण के रचनात्मक कार्यो में होना चाहिए यदि उसका अपव्यय विध्वंसक क्रिया–कलापों में दिखने लगे तो उस समाज का शनैः शनैः पतन होना भी स्वाभाविक होता है सर्वाधिक युवाओं का देश यदि अपनी जीवन शैलीगत् कारणों से दिग्भ्रमित व भटकाव की राह पर चलता दिखे तब इसके लिए समय रहते समाधान भी हमें ही खोजने होंगे।

घोर भौतिकवादी चकाचौंध में पलता–फलता आज का बचपन –यौवन का अपने परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति उदासीनता का भाव चिन्ता का विषय है। भारतीय जीवन मूल्यों अर्थात सदविचार सदाचार, सहिष्णुता, मर्यादा, अनुशासन, कर्तव्यपरायणता का सम्बन्ध हमारे विचारों से है और विचारों का कार्य से तथा इन्हीं जीवन मूल्यों से संस्कृति का जन्म होता है जो हमारे व्यक्तित्व को परिष्कृत कर जीवन को सुख समृद्वमय बनाती हैं। इन्हीं परम्परागत जीवन मूल्यों की सुनहरी छॉव में सदियों से सामाजिक, पारिवारीक, जीवनमूल्य इतिहास की धारा में राम,कृष्ण, बुद्ध, नानक ,भगत, गॉधी, कलाम को जन्म देते आये हैं, जिसने देश,काल समाज की धारा को नई दिशा प्रदान की है। भारतीय जीवन मूल्य वैज्ञानिक है इसमें समाहित, दर्शन अध्यात्म व जीवन दृष्टि ''वसुधैव कुटुंबकम'' के भाग की प्रणेता है। परन्तु पाश्चात्पय संस्कृति की भौंडी नकल की प्रवृत्ति ने नई पीढ़ी के व्यक्तित्व को सुकृत कम विकृत अधिक बनाने का कार्य किया है। युवा पीढ़ी की कितनी प्रतिशत आबादी ऐसी है जो आवरण नहीं आचरण को श्रेष्ठ स्वीकारती है। आत्मकेंद्रित मानसिकता ने उसे 'सर्व के स्थान पर 'स्व' की ओर अधिक प्रेरित किया है धैर्य का अभाव, नशा असत्य, लालच, हिंसा, कामुकता, छल– कपट जैसे दुर्गुणों ने देश के भविष्य की पूॅजी कहे जाने वाले युवा पीढ़ी को विषाक्त करने में कोई कमी नहीं छोडी है। मोबाईल, कम्प्यूटर, कृत्रिम मेधा, रोबोटिक विज्ञान, आकड़ा विज्ञान में सीमा से अधिक तल्लीन युवा पीढ़ी दिन –प्रतिदिन क्या अपने परिवार –समाज से विमुख नहीं होती जा रही है? सर निकोलस कार अपने बहुचर्चित पुस्तक 'द शैलोज़' में इन्टरनेट के प्रमाणों के बारे में लिखते है''इन्टरनेट हमें सनकी बनाता है, हमें तनावग्रस्त करता है, हमे इस ओर ले जाता है कि हम इस पर ही निर्भर हो जाये। इन्टरनेट ने भौगोलिक दूरियॉ जितनी घटाई, आपसी दूरियॉ उतनी ही बढ़ा दी हैं।''

हमें विचार करना होगा कि कोई भी अनुसन्धान मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य अनुसंधान के लिए। विघटित होते संयुक्त परिवार, अनाथ माता–पिता, बढ़ते वृद्धश्रम, फलैट में सिमटते परिवार , स्नेहाकांक्षी बालजीवन, आया की छाया में

पलते नैनिहाल जब युवा होते हैं तो उनके अतीत का एकाकीपन उन्हें पथ भ्रमित करने में सहायक सा होता लगता है। कपोल कल्पित कहानियों का सिने

जगत, विज्ञापनों की बाजारवादी दृष्टि, खेल के नाम पर सट्टेबाजी–जुआ, मुख्य अधिकारियों व नेतृत्व का क्षणिक महिमामंडन करती पीत पत्रकारिता की प्रवृत्ति ने युवाओं को कम समय में बिना परिश्रम के मात्र और मात्र आर्थिक सफलता की ओर बढ़ने की शिक्षा देने का कार्य किया है जो जीवन मूल्यों के विपरीत धारा है।

युवा जगत संभावनाओं का सागर है। उनमें अदम्य उत्साह, अपार क्षमता, पराक्रम, कठोरता दूरदृष्टि के साथ धैर्य, त्याग तथा क्षमाशीलता का असीमित भंडार है। स्वस्थ दीर्घजीवी पारम्परिक मूल्यों एवं आधुनिकता के मणिकांचन संयोग के कुशल प्रयोग द्वारा युवा राष्ट्र को विश्व का सिरमौर बना सकते हैं। हमें स्वीकार करना होग कि तकनीकी के प्रभाव ने पारिवारिक सेवाओं के अभाव में वृद्धि की है ।किन्तु परिश्रमविहीन रंग–बिरंगी इन्धनुषी सपनों की दुनिया की सैर कराने वाली शक्तियों को चिन्हित करना अनिवार्य होंगा। सपने देखना कुशल योजना का द्योतक है किन्तु वह सपने कैसे हो जो कलाम ने देखे जो अवतार सिंह पाश ने जिन सपनों का मर जाना सबसे खतरनाक माना था जो सपने मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिकी समाज के लिए देखे थे । युवाओं को यह स्मरण रखना होगा कि मनुष्य साधन से नहीं साधना से महान बनता है, भवन से नहीं भावना से महान बनता है। उच्चारण नहीं उच्च आचरण से महान बनता है। निःसन्देह युवा पीढ़ी नवाचारपूर्ण अभिनव ज्ञान से लाभाच्छादित है किन्तु दीर्घ वयानुभव का भी विकल्प नहीं हो सकता अतः ज्ञान एवं अनुभव का स्वर्णिम संयोग राष्ट्र को सर्वस्वीकार्य दिशा एवं दशा प्रदान कर सकता है। हालिया विगत दिवसों उस दृश्य को अनदेखा नहीं किया जा सकत है कि किस तरह एक सर्वशक्तिशाली राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रध्यक्ष का रातों–रात अपरहरण कर लिया गया और उस अपमानित देश में देर से एकमात्र विरोध भी हुआ तो ध्यान देने योग्य तथ्य यह था कि उस विरोध प्रदर्शन में प्रतिभाग करने वालों की नब्बे प्रतिशत से अधिक सत्तर वर्ष से अधिक उम्र की थी, जो उस राष्ट्र के युवाहीन होने का ज्वलंत प्रमाण था। हम इस दौर में जी रहे है इस विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

चिंतायाश्च चितायाश्य बिन्दुमात्रं विशिष्यते।

चिता दहति निर्जीवं चिन्ता दहति जीवनम ''

अर्थातः–''चिंता और चिता इन शब्दों में केवल एक बिन्दु का अन्तर है किन्तु चिता निर्जीव शरीर को जलाती है और चिता जीवित को ही जलाती है।''

सम्पादकीय

नशा नाश की जड़

'' **बुद्धि विलुम्पति यत्, द्रव्यं मदकारी तदुच्यते'' शार्ङ्गधर** संहिता में मादक वस्तुओं की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जिन वस्तुओं के सेवन से मनुष्य की बुद्धि लुप्त हो जाती है या कम हो जाती है वे मादक हैं। मदिरा, धूम्रपान, तम्बाकू जनिक उत्पाद, हसीन, गांजा, भांग, चरस, मारिजुआना एल.एस.डी., वेलियम मैन्ड्रेक्स, कोकेन, हेरोइन, स्मैक (ब्राउन सुगर) इत्यादि नशों की लत ने आज के युवा को अपनी गिरफ्त में तिव्रता से लेने का कार्य किया है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज समूचे देश में ड्रग्स का कुविस्तार सम्पन्न–विप्न्न के साथ ही मध्यम वर्ग द्वारा भी छोटे–छोटे गाँव, कस्बों , देहात, शहर, नगर व महानगरों तक कहीं फैशन तो कहीं अवसाद, कुंठा, तनाव दूर करने के नाम पर बहुतायत मात्रा में बढ़ता ही जा रहा है। व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र को विघटित करता यह मायावी दलदल ऐसे अंधेरी सुरंग की तरह है जो अनन्त पतन की आर ले जाती है। मादक पदार्थों के उत्पादन व इसकी व्यावसायक गतिविधियों में लिप्त कुछ देशों तथा, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, नेपाल तथा कुछ अफ्रीकन, यूरोपीय व **पाश्चात्य** देशों, जिनकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ ही इस भस्मासुरप र टिकी है, ' वे नशा मुक्त भारत' की पहल पर ग्रहण लगाना चाहते हैं। हमारा युवा जाने–अनजाने ड्रग्स की अंधेरी दुनिया में कब प्रवेश कर जाता है स्वयं उसे इसका आभास बहुधा समय जाने के बाद समयाभाव, घरेलू कलह, तनाव, कुसंगत, असफलता ''पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव '' अनूठे आंदन की लालसा, मित्रों का दबाव, टी.वी. धारावाहिक, फिल्में, भौतिकवादी आदर्श, फैशन, सेक्स, लाउड संगीत अत्यधिक स्पर्धा, व्यक्तिवादिता, एकाकीपन, अन्ध व्यवसायीकरण, दबाव, कुंठा, हीन भावना, **भग्नाशा** अवसाद, ऊब तथा व्यक्ति की दमनकारी प्रवृत्ति और दोष की भावना, लज्जा चिंता, निराश आदि वह मनोवैज्ञानिक तत्व हैं जो व्यक्ति मादक द्रव्यों का उपयोग करने को प्रेरित करते देखे गये हैं।

नशे के दलदल में फंसा–धसा युवा सर्वप्रथम स्वयं शारीरिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक स्तर पर रसातल को जाता है उसके बाद विवेकशून्य, साधनविहीन होकर वह अपराध की दुनिया का अनचाह मेहमान बन जाता है। प्रायः अधिकांश अपराधों की पृष्ठभूमि में नशा निर्णायक भूमिका में देखा गया है। आंकड़े बताते हैं कि देश के अन्दर अलआववादी, आतंकवादी संगठनों जैसे समूह भी ड्रग्स के कारोबार से धन संग्रह कर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार विगत दशकों में पाकिस्तान विश्व में हेरोइन, ब्राउन सुगर, स्मैक वह हशीश के सबसे बड़े उत्पादक व वितरक के रूप में विकसित हुआ है। वहाँ की सेना व सरकार का विषैला गठजोड़ इस विष को हमारे युवाओं के मध्य धीमे जहर के रूप में प्रचारित–प्रसारित करने के लिए (स्लीपर सैल) सहित अनेक हथकंडों को अपनाती रही है। क्योंकि शत्रु द्वारा युद्ध अब सीमाओं पर कम युवाओं ाकि विविध प्रकार से भ्रमित कर लड़े जाते है , यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे हमारे कुछ प्रान्त अछूते नहीं हैं। माता–पिता, अभिभावक, शिक्षक नेतृत्व क्रीड़ा संस्कृति धर्म, मीडिया, राजनीति, गैर सरकारी संगठन आदि क्षेत्रों से जुडे गणमान्य जनों का नैतिक दायिक्व बनता है कि अपनी युवा पीढ़ी को अधिक से अधिक समय

प्रदान कर उन्हें इस भटकाव से बचाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान न कि मात्र शासन –प्रशासन का मुँह जोहते रहे। एक व्यापक स्तर पर लाई गई जनजागृति की पहल हमारे गुमराह होती युवा पीढ़ी की राष्ट्र की मुख्य धारा में लाकर देश को संशक्त बना सकती है। गाँधी जी के यह विचार सार्वकालिक प्रासंगिक रहेंगे कि ''नशा शरीर से पहले आत्मा का नाश करता है''। नवजवानों को समझना होगा कि–

पछताने के लिए पूरी उम्र पड़ी है
सवार लो इस पल को
यही जिन्दगी बदलने की घड़ी है।

जो स्वयं को जानता है, विद्धान है, जो दूसरों को जानता है ज्ञानी है। –लाओत्से।

कलम के सिपाही : प्रेमचन्द की जयन्ती आयोजन

स्थानीय सरदार भगत सिंह पी.जी. कॉलेज रुद्रपुर में प्रेमचन्द जयन्ती का आयोजन 31 जुलाई को हर्षोल्लासपूर्वक किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० अवधेश नारायण सिंह, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सन्दर्भदता श्री भाष्कर जी, शिव पाण्डेय, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० दीपा गोबाड़ी ने माँ शारदे एवं प्रेमचन्द के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित व पुष्पांजलि अर्पित कर किया। महाविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की गई। डॉ० गोबाड़ी द्वारा आगुन्तकों का स्वागत करते हुए प्रेमचन्द पर रोचक काव्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की गई। सन्दर्भदाता भाष्कर उप्रेती ने अजीम प्रेमजी फाउ० की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला, तथा प्रेमचन्द रचनाओं पर आधारित पोस्टर के माध्यम से परिचर्चा में छात्र-छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित कराई। जिसमें अजय कुमार, अनु यादव, प्रदीप, संजना व सोफिया आदि ने सक्रिय भागीदारी की। श्री उप्रेती ने कहा कि यद्यपि प्रेमचन्द का देहावसान आजादी से पहले हो चुका था, प्रेमचन्द आजादी का सूरज नहीं देख पाये किन्तु अपनी रचनाओं के माध्यम से वे आज भी हमारे मध्य में उपस्थित हैं। डॉ. डी. सी. पाण्डेय ने प्रेमचन्द व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। सभाध्यक्ष/प्राचार्य प्रो० ए० एन० सिंह ने प्रेमचन्द को कालजयी रचनाकार बताते हुए उनकी युगधर्मिता को सादर नमन किया। कार्यक्रम में डॉ० सुमन फुलारा, प्रो० प्रेम प्रकाश, प्रो० चारु ढौंडियाल, प्रो० भरत सिंह, प्रो० दीपा वर्मा, प्रो० अमिता चौरसिया, डॉ० कमला बोरा, प्रो० नीलोफर अख्तर, डॉ राजेश मौर्या, प्रो० पूनम रौतेला, डॉ० अर्पणा सिंह तथा परमजीत, दिव्या, राज, आरती, विद्या एवं नीलिमा आदि उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन डॉ० बसुन्धरा उपाध्याय ने किया।

Youth and white paper take any impression . - English Proverb.

संख्यिकीय दिवस मनाया गया

महाविद्यालय गणित विभाग द्वारा सांख्यिकीय दिवस का सफल आयोजन किया गया। डा0 राजेश मौर्य ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में महालनोबिस का जीवन परिचय देते हुए आंकड़ों के क्षेत्र में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। राष्ट्र के विकास में योजना आयोग द्वारा प्रयुक्त विविध आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में जानकारी प्रदान की।

अर्थशास्त्र विभाग के डॉ0 वकार हसन खान ने आंकड़ों की छद्म विकास दर की वास्तविकता पर गहन विश्लेशण प्रस्तुत किया कि किस प्रकार विभिन्न संगठनों, सरकारों गैर सरकारी संगठनों द्वारा आकड़ों की सारणी द्वारा अपनी योजना कार्य–व्यवहार पर नीतियँ बनाई जाती रहीं है। उन्होंने कहा कि आज के डाटा विज्ञान के युग में देश दुनिया के विविध कार्य–योजनाओं को सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाया जा रहा है।

प्रोफे0 सर्वजीत सिंह ने शोध–अनुसन्धान के क्षेत्र में आकड़ों की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा बताया कि उच्च शिक्षा में आज आकड़ों की आकर्षक गणित को विभिन्न योजनाओं के सफल परिणाम से समझा जा सकता है।

कार्यक्रम के मध्य में अनेक छात्र–छात्राओं द्वारा भी अपने विचार व्यक्त किये गये। सभाध्यक्ष प्राचार्य ए0एन0सिंह ने प्रोफे0 महालनोबिस के योगदान को याद करते हुए चिकित्सा, व्यापार, राजनीति, क्ड़ा व सामाजिक क्षेत्र में आज के आकड़ों के महत्व को रेखांकित किया

कार्यक्रम आयोजकों द्वारा समस्त उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Youth is looking for new answers- so they can question them.-Walt Kelly.

स्वस्थ्य जीवनशैली द्वारा आरोग्य जीवन

महाविद्यालय हेल्थ एण्ड हैप्पीनेस क्लब की ओर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के अन्तर्गत नेशनल वी.पी. स्कीनिंग जागरूकता कार्यक्रम का सफल सम्पादन हुआ। क्लब की संयोजिका प्रो0 दीपा वर्मा ने समस्त उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए स्वस्थ जीवनशैली की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डा0 एस0पी0 सिंह ने आज की भाग दौड़ भरी जीवन शैली में बढ़ती उच्च रक्त चाप की समस्या से दो चार होती आम जिन्दगी को नियमित स्वास्थ्य जाँच, संतुतिल खान–पान, व्ययाम, तनावयुक्त जीवनशैली अपनाने पर बल दिया।

सभाध्यक्ष प्राचार्य प्रोफे0 अवधेश नारायण सिंह ने राष्ट्र निर्माण में स्वस्थ जीवन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज के आम रोगों में रक्तचाप–मधुमेह भयानक रूप से फैलता जा रहा है नई पीढ़ी भी इससे अछूती नहीं है। हम अपनी दिनचर्या को संयमित ढंग से जी कर स्वस्थ्य जीवन का मार्ग अपना सकते है।

डा0 रहमान, वीर सिंह मौर्य और उनकी टीम ने विद्यार्थियों व कार्मिकों को उच्च रक्तचाप के कारण, लक्षण एवं बचाव के साथ ही समय पर नियमित जाँच की ओर ध्यान आकृष्ट किया। सभाध्यक्ष ने कहा कि समय रहते रक्तचाप को चिहिन्त–नियन्त्रित कर हृदय रोग सहित अन्य जानलेवा रोगों से बचा जा सकता है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्मिक, विद्यार्थी सहित शिक्षणेत्तर कार्मिकों ने भी प्रतिभाग किया तथा स्वस्थ व आदर्श जीवन शैली अपनाने का संकल्प लिया।

Youth and age will never agree. - Scottish Proverb

संयुक्त निदेशक (उच्च शिक्षा) ने किया महाविद्यालय का निरीक्षण

संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा प्रो.ए0एस0उनियाल ने 29 जुलाई 2026 को महाविद्यालय का निरीक्षण कर निर्माण एवं विकासपरक समस्त योजनाओं की समीक्षा करते हुए विद्यार्थी–शिक्षकों से सम्बनधित आधारभूत बिन्दूओं पर जानकारी प्राप्त की। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0ए0एन0 सिंह ने उनका पुष्प गुच्छ सहित स्वागत करते हुए शाल ओढ़ाकर संस्था की ओर से सम्मान प्रदान किया गया।

प्राचार्य द्वारा आई.टी लैब, महिला छात्रावास, और वाणिज्य संकाय भवन को महाविद्यालय को हस्तान्तरित करने का विषय प्रस्तुत किया। इस पर संयुक्त निदेशक उ.शि. ने मंडी समिति और पेय जल विभाग के अधिकारियों को दूरभाष पर निर्देशित करते हुए कहा कि लम्बित कार्यों का निस्तारण एक सम्ताह के अन्दर करना सुनिश्चित करें। उन्होंने महाविद्यालय में एन.सी.सी. यूनिट (ऑप्शनल) प्रारम्भ करने तथा नई शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यपुस्तके यथाशीघ्र उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। छांत्र संघ द्वारा सांख्यिकी, अंग्रेजी विषय सहित शिक्षणेत्तर स्टाफ की नियुक्ति की मात्रा उनके सम्मुख रखी।

इस अवसर पर प्रो0 भरत सिंह, प्रो0 चारू ढौंडियाल, प्रो0 प्रेम प्रकाश, प्रो0 सर्वजीत सिंह, डा0 प्रद्युम्न रीछारिया, सहित अनेक कर्मगण–विद्यार्थी–शिक्षणेत्तर कार्मिक उपस्थित थे। महाविद्यालय निर्माण समिति प्रभारी डा0 प्रद्युम्न रिछारिया, ने बताया कि संस्था में समस्त निर्माण कार्य नियमानुसार चल रहे हैं।

Youth comes but once in a lifetime. -Longfellow

एक पेड़ माँ के नाम सहित हरेला उत्सव का आयोजन

प्राचार्य प्रो0(डॉ0) अवधेश नारायण सिंह के दिशा–निर्देशन में महाविद्यालय परिसर में एक पखवाड़े तक 'एक पेड़ मॉ के नाम' कार्यक्रम श्रंख्ला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्मिक, विद्यार्थियों ने परिसर में विभिन्न फलदार, छायादार व हवादार पौधें का रोपण किया गया। मुख्य प्रशासनिक भवन के पृष्ठभाग में विभिन्न प्रजाति के आम, चिकू, लीची, कटहल, नीम सहित अन्य पौधों को भी रोपण किया गया।

प्राचार्य ने निर्देशित किया कि न केवल मात्र वृक्षारोपण करना है वरन, उसके सिंचन व संरक्षण का दायित्व भी लेना है। उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारी प्राणवायु का आधार हैं अतः हम सबकों वृक्षों की यत्तनपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। 'एक पेड माँ के नाम' नामक कार्यक्रम में समस्त कार्मिक एवं अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभागिता की गई। विविन्न तिथियों में डा0 प्रदीप कुमार प्रो0 सर्वजीत सिंह, डॉ0 विकार हसन खांन, डॉ. शलभ गुप्ता, प्रो0 दीपा गोबाड़ी, डॉ0 सुमन फुलारा, डॉ0 वी.सी. जोशी, डॉ0 अनूप सिंह, डॉ0 प्रद्युम्न, डॉ0 पवन कुमार, डा0 दुर्गेश शुक्ला, डॉ0 कमला बोरा, डॉ0 पंकज टम्टा, सहित चन्द्रशेखर पाठक, रोशनी कुमारी, संदीप डसीला, छात्र संघ अध्यक्ष रजत सिंह,उपाध्यक्ष, सचिव जसवंत सिंह गंगवार, छात्र गुरूबाज सिंह, अभिषेक व असलम सहित अनेक छात्र–छात्राएँ उपस्थित थें।

In Youth we learn; in age we understand. -Marie Ebner-Eschenbach.

करो योग रहो निरोग का संदेश दिया

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवसके अवसर पर महाविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट्स तथा महाविद्यालय के प्राध्यापकों व कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर भागीदारी की । इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 अवधेश नारायण सिंह ने योग के महत्व पर संबोधित करते हुए कहा कि योग विश्व स्तर पर प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है। दुनिया के अधिकांश देशों में मनाये जाने वाले योग को संयुक्त राष्ट्र संघ के मान्यता प्राप्त है। आज योग हमारी दैनिक जीवनचर्या का अंश है। वर्तमान भौतिक जीवन में स्वस्थ रहने का आधार योग है। विभिन्न योगमुद्राओं में राष्ट्रीय कैडिट कोट का प्रर्दशन आकर्षक रहा।

इस अवसर पर महाविद्यालय एन.सी.सी आर्मी विंग की ए.एन.ओं, डा.निमिता कन्याल, डा0 विकार हसन खान, डा.वसुन्धरा उपाध्याय, डा.सुमन फुलारा, डा.प्रद्युम्न रिछारिया, डा0 विपिन जोशी, डा0 नवीन मोलेखी, डा. ओमप्रकाश, प्रोफ. भरत सिंह राजपूत, डा0 कमला बोरा, प्रो0 पूनम रौतेला, डा0 प्रदीप कुमार, डा0 इन्दु शेखर ममगाई सहित अनेक छात्र–छात्राएँ व कर्मचारी उपस्थित रहे।

Age considers, Youth ventures. -Anonymous

शिक्षण सत्र 2025–2026 का अंकेक्षण सम्पन्न

दि0 10 अगस्त 2026 से 19 अगस्त 2026 तक महाविद्यालय का शिक्षण सत्र 2025–2026 का अंकेक्षण सम्पन्न हुआ। महाविद्यालय स्तर पर गठित अंकेक्षण समिति के संयोजक प्रोफेसर प्रेम प्रकाश ने अवगत कराया कि निवर्तमान सत्र के अंकेक्षण में राज्य स्तरीय अंकेक्षण विशेषज्ञों ने सेवा अभिलेखों, छात्र–शुल्क, निधियाँ, बजट, योजनागत निर्माण, छात्रवृत्ति, आय–व्यय, कीड़ा, लघु– निर्माण, पुनर्निमाण, अनुरक्षण विविध मदों का समीक्षात्मक अवलोकन किया गया।

महाविद्यालय के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री मंजीत सिंह वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री आकाश बोरा, सदस्य डा0 प्रद्युम्न रिछारिया सहित अन्य सदस्यगण उपस्थित रहें। अंकेक्षण समिति के प्रभारी बाहय विशेषज्ञ श्री.पाण्डेयने महाविद्यालय अंकेक्षण समिति को विविध पक्षों से अवगत कराया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ए.एन.सिंह ने बाहय अंकेक्षण समिति के प्रति धन्यवादएवं आभार व्यक्त करते हुए वर्तमान कमियों का भविष्य में संशोधित कर त्रुटियों का निराकरण किया जायेगा।

Reckless youth makes rueful age. - Benjamin Franklin.

विश्वविद्यालयी मुख्य परीक्षाएँ निर्विघ्न सम्पन्न

महाविद्यालय परीक्षा प्रभारी प्रो0 प्रेम प्रकाश से प्राप्त सूचना के अनुसार शिक्षण सत्र 2025–2026 में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के स्नातक एवं परास्नातक स्तर को मुख्य परीक्षा में 8128 जबकि अंक सुधार परीक्षा में 1866 कुल 9994 परीक्षार्थियों द्वारा परीक्षा गतिमान किया गया। परीक्षा मध्य स्थानान्तरण प्रक्रिया गतिमान रहने की दृष्टि से निवर्तमान परीक्षा प्रभारी डा0 शलभ गुप्ता द्वारा प्रो0 प्रेम प्रकाश को प्रभार हस्तगत किया गया।

महाविद्यालय परीक्षा केन्द्र पर इन्दिरा गाँधाी मुक्त विश्वविद्यालय एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के विविध कक्षाओं की परीक्षाएँ सुगमतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस मध्य दि. 16. 08.2026 रविवार को कु0वि.वि. की बी.एड. प्रवेश परीक्षा का भी समापन हुआ।

शिक्षण सत्र 2026–2027 को प्रवेश प्रक्रिया गतिमान है स्नातक कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संथान में प्रवेश प्रक्रिया उच्चस्तर से प्राप्त आदेशानुक्रम में अविरत हैं। अंतिम प्रवेश तिथि के उपरान्त प्रत्येक संकाय के प्रथम सत्रार्ध स्नातक–परास्नातक का अन्तिम प्रमाणित आकड़ा प्रवेश प्रभारी से प्राप्त होने को सूच्य हैं। इसहेतु निमिम्न समितियाँ संकायावार गठित की गई है। प्रवेश– प्रक्रिया शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो रही है।

समय ही धन है। . –बुल्वर लिटन।

महाविद्यालय में नये शोधार्थी पंजीकृत हुए

महाविद्यालय शोध एवं प्रसार प्रकोष्ठ की संयोजिका प्रो0 पूनम रौतिला ने अवगत कराया कि कुमाऊँ वि0वि0 नैनीताल द्वारा सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में कला संकाय के विविध विषयों में चौदह विद्यार्थियों को शोध निर्देशक आवंटित किये। उक्त छात्रों द्वारा महाविद्यालय में दिनांक 30.07.2026 तक विधिवत प्रवेश प्रप्त किया गया। जिसकी सूचना वि0 वि0 , शोध अनुभाग को यथावधि प्रेषित की गयी । विवरण इस प्रकार हैः–

क.सं0	विषय	पंजीकृत संख्या
1	हिन्दी	02
2	राज0 विज्ञान	02
3	इतिहास	03
4	संस्कृत	03
5	समाजशास्त्र	03
6	अर्थशास्त्र	01

संयोजक प्रो0 पूनम रौतेला के अनुसार वि0वि0 के दिशा. निर्देशानुसार आगामी कक्षा आदि की सूचना यथासमय सम्बंधित विषय निर्देशकों द्वारा शोधार्थियों को प्रेषित की जायेगी, जिससे कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानकानुसार शोध कार्य सम्पन्न किया जा सकेगा।

A man that is young in years may be old in hours, if he has lost no time. - Francis Bacon.

स्थानान्तरणोपरान्त स्वागत–विदाई समारोह सम्पन्न

माह जून 2026 के दिनांक 09 को विभागीय उच्चस्तर से प्राप्त स्थानान्तरण आदेश के अनुक्रम में महाविद्यालय में लगभग दो दर्जन से अधिक प्राध्यापकों द्वारा कार्यभार ग्रहण किया गया तथा इतने ही प्राध्यापकों को अन्य संस्था हेतु कार्यमुक्त किया गया। शासकीय प्रक्रिया के इस अंश के अनुपालन को प्राचार्य प्रो0ए0एन0 सिंह द्वारा सेवा अनिवार्य हिस्सा बताते हुए कहा कि राज्य उच्च शिक्षा के अन्तर्गत विविध सेवाओं में आये नवागंतुकों का स्वागत है तथा कार्यमुक्त कार्मिकों को शुभकामनाएं हैं। महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास में प्राध्यापकों की निर्णायक वह गुरूतर भूमिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह संस्था अपने उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए राज्य की उच्च शिक्षण संस्थाओं में अग्रणी भूमिका निर्वहन करेगी। संस्था में दीर्घ सेवा प्रदान कर चुके कार्यमुक्त प्राध्यापक व कार्मिकों को उनके योगदान के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हुए उनके लिए शुभकामनाएं व्यक्त की है गई तथा आशा कि वह अपनी नई संस्था के सतत् विकास हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।

स्थानान्तरण आवागमन सूची–

मैंने समय नष्ट किया, और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। –शेक्सपीयर।

कार्मिकों का विवरण (नवागन्तुक एवं कार्यमुक्त कार्मिक)

विषय / संकाय	नवागन्तुक	कार्यमुक्त कार्मिक
कला संकाय		
भूगोल	डा०शिवनारायण सिद्ध	डा० पूनम शाह गंगोला
इतिहास	डा० दुर्गेश शुक्ला	डा० प्रमोद जोशी
राजनीति विज्ञान	डा० अजय गिरी	
अर्थशास्त्र	डा0 पवन कुमार झा	
	डा0 रश्मि आर्या	डा0 सुनील कुमार मौर्य
समाजशास्त्र	डा0 सुमन कुमार	डा0 रविन्द्र सैनी
		डा0 हेमलता सैनी
		डा0राजेश कुमार सिंह
हिन्दी	डा0 दीपा गोबाड़ी	डा0 विवेकानन्द पाठक
	डा0डी0सी0पाण्डेय	डा0 रूमा शाह
संस्कृत	डा0 ओमप्रकाश	डा0 मनोज कुमार
अंग्रेजी	प्रोफे0 नीलोफर अख्तर	डा0 मनोज कुमार पाण्डे
विज्ञान संकाय		
रसायन विज्ञान	डा० विपिन चन्द जोशी डा० भूपाल सिंह कार्की	डा० प्रेम प्रकाश त्रिपाठी डा० दीपक दुर्गापाल
भौतिक विज्ञान	डा० चारू चंद्र ढौंडियाल	डा० गायत्री काण्डपाल
वनस्पति विज्ञान	डा० प्रेम प्रकाश डा० पंकज टम्टा	डा० ए० के० पालीवाल डा० शलभ गुप्ता डा० अंकिता चंदोला
गणित	डा० मीनाक्षी	डा० राघवेन्द्र मिश्रा
जन्तु विज्ञान	डा० रवीन्द्र कुमार डा० मोनू बाला	डा० दीपमाला डा० वन्दिता काण्डपाल
वाणिज्य संकाय		
	डा० रोहित शर्मा डा० मनीषा सांगवान	डा० इन्दुशेखर ममगाईं डा० चन्द्रपाल
क्रीड़ा	डा० रुचि शाह	डा० राजेश कुमार
कार्यालय	-	श्री विजय सिंह
	श्री आकाश बोरा	सुश्री प्रियांशी

बूट शिविर सम्पन्न

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूद्रपुर (ऊ0सिं0नगर),। उच्च शिक्षा विभाग की देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत अगस्त प्रथम सम्ताह में तीन दिवसीय उद्यमिता विकास प्रशिक्षण का ETC का सफल समापन हुआ। तीन दिनों के आवासीय बूट शिविर में काशीपुर, रूद्रपुर, टनकपुर,हलद्वानी , नानकमत्ता और खटीमा के राजकीय व सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के 63 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग कियया।

महाविद्यालय की नोडल अधिकारी डा0 गरिमा जायसवाल से प्राप्त सूचना कि अनुसार इस शिविर में महाविद्यालय के 12 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिन्हें विषय विशेषज्ञों द्वारा उद्यमिता, डिजाइन थिंकिंग, आइडिया, वैलिडेशन और ब्रेनस्टॉर्मिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। सन्दर्भताओं ने नवाचारी अभिनव व्यवसायों की ओर भी विचार करने हेतु प्रेरित किया। जिनमें बिजनेस मॉडल,वित्तीय योजना, ब्रॉडिंग और विपणन का क्षेत्र प्रमुख आकर्षण एवं लाभकारी रहने की सम्भावना है। उद्यमिता विशेषज्ञ डा0 रजत शर्मा, नैनीताल के परियोजना अधिकारी भूपेन्द सिंह मेहरा, अल्मोड़ा के परियोजना अधिकारी महेन्द्र रौतेला ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफे0 अवेधेश नारायण सिंह ने उद्यमिता के महत्व पर सम्बोधित करते हुए बताया कि राज्य एवं केन्द्र सरकार को विविध महत्वकांक्षी योजनाओं में उद्यमिता कार्यक्रम रोजगारोन्मुखी है अतः समस्त रोजगारप्रिय विद्यार्थियों को इसमें बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता करनी चाहिए।

समय महान् चिकित्सक है। –डिजरायली।

नवागन्तुक दीक्षारम्भ सम्पन्न

दिनांक 11,12,13, अगस्त 2026 को नवप्रवेशित कला, वाणिज्य, विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों हेतु दीक्षारम्भ कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 अवेधेश नारायण सिंह ने कहा कि कालेज में प्रवेश छात्र–छात्राओं के जीवन की नई शैक्षणिक यात्रा की शुरूआत है। कालेज छात्रों के सर्वांगीण विकास में पढ़ाई के साथ रचनात्मक और पाठ्य सहगामी गतिविधियों के भी अवसर उपलब्ध करा रहा है। प्रोफे0 सी0सी0ढौंडियाल ने विज्ञान संकाय के छात्रों को अकादमिक व्यवस्था की जानकारी दी।

कला संकाय के मानवीकी विषयों में कैरियर भी सम्भावनाओं पर प्रो0 सर्वजीत सिंह, प्रो.आशा राणा, प्रो0 सुमन कुमार सहित वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं को डा.आरती, डा. मनी शाह, डा0 अतीश, प्रो0 दीपा वर्मा, प्रो0 दीपा गोवाडी, प्रो0 अमिता, डा. बसुन्धरा, डा. सुमन फुलारा, डा.दिशा, डा.दुर्गेश, डा0 पवन झा,डा.प्रेम प्रकाश सहित अनेक प्राध्यापक–छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

महाविद्यालय प्रवेश प्रभारी प्रो0प्रेम प्रकाश ने अवगत कराया कि विविध कक्षाओं में विधिवत अध्यापन प्रारम्भ हो चुका है अतः विद्यार्थीगण नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित सुनिश्चित करें जिसमें कि उनकी 75 प्रतिशत उपस्थिति नियमावली का पालन हो सकेगा।

श्रद्धांजलि

महाविद्यालय के कार्मिक श्री महेन्द्र पाल (बाहय स्रोत पर्यावरण मित्र) का दिनांक 20 अगस्त,2026 को आकस्मिक देहावसान पर महाविद्यालय परिवार द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया। वाहन दुर्घटना हुई इस क्षति से उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की गई तथा मृतात्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजलि व्यक्त की गई।
ॐ शांति शांति शांति ।

Youth and white paper take any impression. – English Proverb.

स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से सम्पन्न

म्हाविद्यालय में 15 अगस्त के उपलक्ष्य में सम्पताह भर चलने वाले विविध कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक समापन हुआ। महाविद्यालय के बी.एड. विभाग द्वारा 'हर घर तिरंगा' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता सहित अनेक देशभक्ति परक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बी.एड. की छात्राओं द्वारा आकर्षक व मनमोहम, रंगोलियां निर्मित की गई। बी.एड. विभागग प्रभारी डॉ. मुन्नी जोशी के दिशा निर्देशन में डॉ. अनिल कुमार, श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय, श्री नवीन, डॉ0 श्रृंखला वह श्री लोकेश चंद्र पांडे द्वारा सक्रिय सहयोग प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विविध कार्यक्रमों में प्रतिभागिता व अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.ए.एन.सिंह ने कहा कि किसी भी राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता दिवस सबसे बड़ा उत्सव होता है। अपने देश की आजादी के लिए जिन महानुभावों ने अपने प्राणों की आहुति दी, आज हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि वर्तमान के विषम समीकरणों के दौर में युवा पीढ़ी अपनी गौरवमयी परम्परा को स्मरण रखे तथा अपने प्रतीकों, संविधान एवं सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए मर्यादित आचरण के साथ राष्ट्र के नुनर्निमान में अपना सर्वाधक योगदान दे।

प्राचार्य ने कहा कि भारत युवाओं का देश है तथा भारत को विश्व का नेतृत्व करना है, इसके लिए हमारे अनगिनत युवाओं की राष्ट्रभक्ति व सामाजिक चेतना हमें मंज़िल तक पहुँचा सकती है जिसके हम हकदार हैं। विविध कार्यक्रमों में महाविद्यालय के प्राध्यापक, कार्मिक व अनेक विद्यार्थी गण उपस्थित रहें।

अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। — बुद्ध

क्रीड़ा प्रतिभाओं को प्रेरित किया

29 अगस्त,2026 राष्ट्रय खेल दिवस के अवसर पर महाविद्यालय क्रीडा प्रभारी डा.रूचि शाह द्वारा क्रीडा प्रतिभाओं का उत्साहवर्धन करने हेतु एक रस्साकशी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नवप्रवेशित छात्र–छात्राअें को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि खेल व्यक्ति के मनोरंजन व स्वस्थ रहने का आधार ही नहीं वरन यह आज एक अच्छा कैरियर भी है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार की विविध महत्वकांक्षी योजनाओं का युवाओं को लाभ उठाने के लिए छात्र–छात्राओं को महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग के सम्पर्क में रहना चाहिए।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने जीवन में खेलों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज हम मेजर ध्यानचंद जी को इसीलिए याद कर रह हैं कि हॉकि के इस जादूगर ने हमें ओलम्पिक में वैश्विक पहचान दिलाई। हमारे देश में प्रतिभाग का आभाव नहीं है, प्रतिभाओं के लिए अब अवसरों की भी कमी नहीं है। अतः युवाओं को इसका लाभ उठाना चाहिए तथा अपने साथ महाविद्यालय., क्षेत्र वि.वि, राज्य व देश का नाम रोशन करना चाहिए।

इस अवसर पर प्रो0 पूनम रौतेला, डा0 निमिता, डा0 प्रदीप, डा0 कमला बोरा, श्री लोकेश सहित अनेक प्राध्यापक उपस्थित थे अनुसेवक चद्रसेखर पाठक व विजय ने सक्रिय भूमिका निभाई। छात्र संध अध्यक्ष रजत सिंह उपाध्यक्ष चेतन भट्ट सहित समस्त पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 नीलोफर ने किया।

जे निर्बल पर क्षमा नहीं करता, उसे बलवानों के अत्याचार सहने होंगे। –शेख सादी

रोजगार मेला सम्पन्न

जिला सेवायोजन कार्यालय, ऊधमसिंह नगर द्वारा बेरोजगार पुरूष युवाओं को रोजगार प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 25 अगस्त 2026 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर में एक दिवसीय रोजगार मेला (प्लेसमेंट ड्राइव) का आयोजन सम्पन्न हुआ। बी.ए, बी.कॉम, बी.एस.सी, आई.टी.आई तथा पॉलिटेक्निक डिप्लोमा उत्तीर्ण आवेदकों ने इसमें प्रतिभाग किया। जिनकी आयु 19 से 25 वर्ष के मध्य की थी। मात्र पुरूष वर्ग के आवेदकों द्वारा मेले में भाग लिया गया।

जिला सेवायोजन अधिकारी राजीव गुप्ता के अनुसार इस तरह के कार्यक्रम स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देते हैं। प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने इस तरह के कार्यक्रमों में युवाओं से बढ़–चढ़कर भागीदारी करने को कहा। उन्होंने कहा कि समय कौशलपूर्ण काम का है। को निष्फल न करें, कड़ी मेहनत, सतत्, प्रशिक्षित प्रयास व लगनपूर्वक अपनी योग्यता के बल पर उत्तम रोजगार प्राप्त कर अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रो.सर्वजीत सिंह, प्रो.विकास दुबे, डॉ.बी.सी. जोशी, डॉ. रोहित शर्मा, डॉ. सुमन फुलारा, डॉ.वी.एच. खान, ज्योति पांडे, सूरज कुमार, सहित छात्र संघ अध्यक्ष, व समस्त पदाधिकारी रजत बिष्ट, चेतना भट्ट आदि उपस्थित रहे।

बिना सदगुण के सुदरता अभिशाप है। – चीनी लोकोक्ति।

पुण्य

प्रो0 दीपा गोबाड़ी
विभाग प्रभारी हिन्दी

गंगा स्नान के लिए चित्रा और विवेक प्रयाग राज में गंगा पर उतरे तो उन्हें ज्ञात हुआ की स्नान हेतु उन्हें काफी पैदल चलना पड़ेगा भीड़ हो` करण वहॉ तक बस नहीं जाती थी। भीड़ भाड़ भी काफी थी। एक रिक्शेवाले से बात की तो उसने वहां तक पहुॅचाने के 50 रू. लेने की बात कही। चित्रांतुरनत बोली– भैया क्यों लूट मचाते हो। वहॉ तक इतने रूपए नहीं होते हैं हम तो 30 रू. ही देंगे। चलना है तो चलो, नही ंतो हम दूसरा रिक्शा लेते हैं। रिक्शावाला उम्र दराज था। बोला बैठो बेटा। तीर्थनगरी है। आपको गंगा स्नान के लिए जा रहा हूॅं। पुण्य का काम है। जो मर्जी दे देने। दोनों रिक्शे में बैठे। सामान कम ही लाए थे सो पीछे रख लिया। सर्द ठण्ड में भी बुढ़ा रिक्शेवाला हांफ रहा था और लगभग पैदल चलते हुए रिक्शे को भीड़ के बीच में से खींच रहा था। अन्ततः वे स्नान वाली जगह पर पहुॅचे। जो काफी बड़ा मिट्‌टी का टीला और मैदान था। रिक्शे वाले को पैसे देते हुए चित्रों को उस ठण्ड में भी रिक्शेवाले की कनपटी पर फैली हुई पसीने की बूंदे स्पष्ट दिख रही थी। चारों ओर के वातावरण को देखकर चित्रा और विवेक बहुत हर्षित उठे। आसपास छोटी–छोटी दुकान थी। जो फूलमाला, प्रसाद, दिए, सिंदूर, चूड़ी आदि से सजी थी। रेत के ढलान से उतरते ही गंगा नदी के इस तरफ नहाने हेतु रेत के बोरों से आढ सी बना दी गई थी और स्थान स्थान पर नहाने हेतु छोटे छोटे कुण्ड से बनाए गए थे। दोनों ने हाथ पकड़ एक साथ ठण्डे जल में डुबकी लगाई। चित्राने आते मय नजदीकी दुकान से गंगा में प्रवाहित करने हेतु दीपक ले लिया था। जो गंगा स्नान के बाद उसने दीपक प्रज्वलित कर जल में प्रवाहित कर दिया। वहॉ एक व्यक्ति छोटी बाल्टी में पनीला दूध लिए हुए था। बोला मांजी गंगा मैया में देध भी चढ़ाते हैं। चित्रा ने पूछा कितने का है। वह बोला–10 रूपये का है। चित्रा को उसने नीला सफेद दूध दे दिया। जिसे उसने सूर्यदेव को अर्घ्य देते हुए जल अर्पित कर दिया। उसने तीन चार बाद उसी में थोड़ा थोड़ा पानी वाले दूध डाला। चित्रा को कुछ समझ नहीं आया वह थोड़ा–थोड़ा चढ़ाती रही। विवेक चिल्लाया क्या कर रही हो मत करो और ज्योही चित्रा 10 रूपये उस व्यक्ति को देने लगी। वह बोला मांजी 50रू. होते हैं। आपने पॉच बार दूध चढ़ाया है। चित्रा को अपने ठगे होने का एहसास हो चुका था। उसे विवेक की डांट भी पड़ चुकी थी और 50रूपये देने ही पड़े। इस पुण्य कार्य में उसे वापसी में पसीना पोछते रिक्शेवाले का चेहरा बरबस ही याद आ गया।

अपने चेहरे जो जाहिर है छुपाएँ कैसे
तेरे मर्जी के मुताबिक नजर आए कैसे
लाख तलवारें बढ़ी आती हैं गर्दन की तरफ
सर झुकाना नहीं आता तो झुकाएँ कैसे।

–वसीम बरेलवी

देवभूमि के पहाड़ों की पीड़ाः पलायन, विकास और बदलता ग्रामीण जीवन

गणेश भट्ट
बी0ए0 तृतीय सेमेस्टर

भारत के हिमालयी भूभाग में स्थित उत्तराखंड अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक परंपराओं के कारण देवभूमि उत्तराखंड के नाम प्रसिद्ध है।

किसी बाहरी व्यक्ति के मन में देवभूमि जैसा विशेषण सुनते ही स्वर्ग के सौंदर्य से परिपूर्ण क्षेत्र का चित्र स्वतः निर्मित होना कोई आश्चर्य का विषय नहीं है।

ऊँचे गगनचुंबी, गहरी घाटियाँ, भिन्न–भिन्न वृक्षों व पुष्पों का सौंदर्य ये सब विशेषताएँ किसी भी दूर स्थित व्यक्ति को लुभाने क लिए पर्याप्त हैं।

वर्तमान समय में देवभूमि उत्तरखण्ड की ये सभी विशेषताएँ व अन्य वे पहलू जो पूर्णतः उजागर नहीं हुए हैं, इस राज्य को हिंदी के मुहावरे दूर के ढोल सुहावने का एक सटीक उदाहरण बनाते है।

आज भले ही यहाँ आर्थिक गतिविधियों तथा विकास में वृद्धि हुई है, परंतु पर्वतीय क्षेत्रों में, मुख्यतः दूर दराज के इलाकों में आज भी आर्थिक पिछड़ापन, शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी, रोजगार की न्यूता, मूलभूत सुविधाओं की कमी जैसी कई समस्याएं उसी प्रकार बनी हुई हैं जैसी वे राज्य के गठन के समय थी।

राज्य के गठन के 25 वर्ष पश्चात भी पहाड़ी क्षेत्रों में पलायन एक प्रमुख समस्या है। इस पलायन का कोई एक कारण नहीं है रोजगार की अनिश्चिता, स्वस्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धता न होना, उचित शिक्षा की कमी इत्यादि अनेक कारण ऐसे हैं जिनसे उत्तराखंड में पिछले एक दशक के दौरान वार्षिक पलायन दर में लगभव 67 प्रतिशत की भारी बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

द न्यू इंडियन की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2008 के बीच रज्य से 5,02,717 लोग पलायन कर गए, यानी औसतान प्रति वर्ष 50,272 लोग। हालाँकि, 2018 से 2022 के बीच 3,35,841 लोग राज्य छोड़कर चले गए, जिसका मतलब है कि प्रति वर्ष 83,960 लोग पलायन कर रहे हैं।

ग्राम्य विकास एवं पलायन निवारण आयोग के आंकडों के अनुसार, राज्य से होने वाले पलायन का पैटर्न तेजी से बदला है।

रोजगार और शिक्षा के लिए पहाड़ी गांवों से कुल् पलायन का लगभग 76 प्रतिशत हिस्सा राज्य के ही नजदीकी मैदानी शहरों जैसे देहरादून, हल्द्वानी, रूद्रपुर हरिद्वार या जिल मुख्यालयों की तरफ हुआ है।

हालांकि कोरोना काल से अब तक के वर्षो में लगभग 6000 लोगों से रिवर्स पलायन को चुना है परंतु यह आँकड़ा इतना संतोषजनक नहीं है।

आज यह बात किसी से छुपी नहीं है कि राज्य में सैकड़ों गांव ऐसे हैं जिनकी आबादी घटकर दो अंकों से सिमट गई है या जो पूरी तरह वीरान हो चुके हैं। जिन्हें अब घोस्ट विपेज कहा जाने लगा है।

कई ग्रामीणों के अनुभव यह बताते है कि मजबूरी में किए गए पलायन ने उनके सम्मुख आर्थिक समस्याओं के साथ–साथ मानसिक समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं।

पलायन को रोकने के लिए शासन स्तर से कई योजनाओं का संचालन व कुछ समितियों का गठन किया गया है परंतु उनके प्रभाव का आकलन करने पर यह ज्ञात होता है कि दूरस्थ क्षेत्रों में इसके अपेक्षित अभी तक नहीं दिखाई दिए हैं। धरातलीय स्तर पर पलायन की इस समस्या को एक संतोषजनक स्तर तक कम करना है तो पर्वतीय क्षेत्रों में भी मूलभूत सुविधाओं को उसी प्रकर आम लोगों तक पहुँचाना होगा जैसा वे शहर में पहुँचाई जाती हैं। उन्हें यह विश्वास दिलाना भी आवश्यक है कि गाँवों में भी एक बेहतर जीवन की कई संभावनाएं मौजूद हैं।

हालाँकि पर्वतीय क्षेत्रों में केवल पलायन ही एकमात्र नहीं है जो लोग आज भी वहाँबसे हुए हैं उनके लिए अपने जीवन को सुरक्षित रखना भी एक अहम चुनौती है। राज्य में तेजी से हो रहे विकास कार्यों ने यहाँ के सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डाला है। वनों के लगातर कटान तथा वन्य क्षेत्रों में बढ़ती मानव गतिविधियों ने जंगली जानवरों के गाँवों की ओर जाने पर विवश कर दिया है। इन जानवरों के आतंक ने पर्वतीय लोगों के मन में भय की स्थिति पैदा की हैं।

टइम ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि जनवरी 2026 से जून 2026 तक जंगली जानवरों के कारण 36 लोगें की मृत्यु हो चुकी। यह भयमुक्त जीवन भी उन्हें गाँवों से पलायन करने पर मजबूत कर रहा हैं। जानवरों के इस आतंक से पर्वतीय क्षेत्रों में मवेशियों का भी नुकसार हाता है इसलीए यह जीवन रक्षा का विषय ही नहीं बल्कि उन लोगों के लिए रोजगार का संकट भी खड़ा कर रहा है जो जीवन निर्वाह के लिए मुख्यतः पशुपालन पर निर्भ हैं।

मवेशियों के लगातार नुकसान से उनकी आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होती है और इस सब का असर कहीं न कहीं पहाड़ों की नई पीढ़ी पर भी पड़ता है।

जीवन की इन कठिनाइयों के बीच उन छात्र–छात्राओं को नहीं भुला जा सकता जो अपने घर की आर्थिक स्थिति के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में बेहतर शिक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आज प्रधानमंत्री सड़क योजना के द्वारा गाँव–गाँव सड़क तो पहुँचाई गई है परंतु उन सड़को पर चलने वाली गाड़ियों में बैठ कर दूर विद्यालय

तक जाने के लिए उनके पास पर्याप्त धन की सुविधा ही नहीं होती जिस कारण वे बच्चे विवश होकर कई किलोमीटर पैदल चलकर विद्यालय जाते हैं।

केवल पर्यटन के लिए ही यातायात की सुविधा करने के बजाय इन छात्रों के लिए भी यातायात की सुविधा की जानी चाहिए। यदि उन छात्र–छात्राओं के लिए निःशुल्क या किफायती वाहनों की सुविधा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाय तो यही युवा उन पर्वतीय क्षेत्रों में अपनी शिक्षा के बल पर नए, रोजगार के अवसरों का सृजन कर पाएंगें।

इसी प्रकार गाँवों में बंजर पड़ी ज़मीनों पर बागवानी तथा स्थाई कृषि को बढ़ावा देने, पशुपालन के लिए बीमा तथा पशु चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध करने तथा वहाँ के स्थानीय उत्पादें के लिए बाजार विकसित करने की आवश्यकता है। इन सभी प्रयासों से पर्वतीय इलाकों में बसे लोगों की आय बढ़ेगी उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा। इस प्रकर जब गाँव में शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार तथा अन्य मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध होंगे तभी वहाँ से हो रहे पलायन को भी कम किया जा सकता है।

अंततः उत्तराखंड में एक सार्थक विकास के लिए केवल इसके बाहरी सौंदर्य को बचाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि यहाँ के स्थानीय लोगों के जीवन की रक्षा करना, उन्हें मूलभूत सुविधाएं प्रदान करना भी आवश्यक है जिससे वे अपना जीवन खुशी से निर्वाह कर सकें आखिर उत्तराखण्ड का वास्तविक सौंदर्य केवल पहाड़ों, नदियों, जंगलों में ही नहीं बल्कि वहाँ बसे लोगों में भी है।

हत्यारे की कुल्हाड़ी की तुलना में ईर्ष्या की धार दोगुनी तेज होती हैं। –शेक्सपीयर।

सर्वाधिकार@ सुरक्षितः

स्वामित्व/संरक्षकः– प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह प्राचार्य– राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर,(ऊधम सिंह नगर), द्वारा

संरक्षकः	प्राचार्य
सम्पादकः	डी0सी0पाण्डेय
संकलन	डा0 वी0एच0खान
तकनीकि सहयोग एवं टंकन	ज्योति पाण्डे
आवरण पृष्ठ	डा0 सुमन फुलारा
अंक परिकल्पना	डा0 सुमन कुमार
रंग संयोजन	कमलेश सिंह बिष्ट
लिप्यांतरण	डा0 बिपिन चन्द्र जोशी
सन्/माह	2026/जून ,जुलांई एवं अगस्त
ई–बुलेटिन अवधि	त्रैमासिक

आलोकः–ई–बुलेटिन में टंकित/अंकित सामग्री विभिन्न विभागानुभाग प्रभारियों से प्राप्त अभिलेख एवं सूचना के आधार पर उल्लेखित है। सम्पादक मंडल का आलेख –अभिलेखदाताओं से सहमत होना आवश्यक नहीं है। उसके लिए लेखकगण स्वयं दायित्ववान होगे।